ऐसा भी होता है!

विभा कौल

चित्राँकनः जय

यह किताब

....

की है

इस किताब के प्रकाशन में सहायता के लिए कथा

कॉगनिज़ेंट फाउण्डेशन,

चेन्नई की आभारी है।

v/;kid@v/;kfidkvk d fy,

cM mnn' ; Ük[kyk – इस शृंखला की पुस्तकों में कहानियों द्‌वारा बच्चों को अपने वातावरण, जीवन और भविष्य के प्रति सजग एवं सक्रिय होने की प्रेरणा दी जा रही है।

vc Hkjk mMku! & vkx i<u dk ikRlkgu

,lk Hkh gkrk g एक ऐसे गाँव की कहानी है, जहाँ प्राकृतिक ऊर्जा से जीवन को जीने योग्य बनाया गया है। इसे पढ़कर शुद्ध वातावरण के महत्व और ऊर्जा के अन्य स्त्रोतों के बारे में बच्चों के साथ चर्चा करें।

ऐसा भी होता है!

विभा कौल

चित्रांँकनः जय

कथा

उस दिन बहुत गर्मी थी। नूतन चूल्हे के लिए लकड़ियाँ इकट्ठी करने आई थी क्योंकि, उसकी माँ बीमार थीं।

उस चिलचिलाती धूप में वापिस जाने के ख़्याल से उसे रोना आ रहा था।

अगर नूतन नहीं आती तो, घर में सभी को भूखा रहना पड़ता।

वह एक पेड़ की छाया में बैठ गई। तभी एक लड़की नाचती-गाती वहाँ आईः

“चाहिए जो कुछ भी
जीने के लिए,
वर्षा, सूर्य, पवन
से मिले।
संतोष से यदि सब
रह सकें,
मन में बस लालच
आने न दें।”

“तुम कौन हो?” नूतन ने पूछा।

“मैं आशा हूँ। मैं नदी के उस पार रहती हूँ। आओ, मैं तुम्हें अपनी दुनिया दिखाती हूँ।”

आशा नूतन को नाव में बैठाकर अपने घर ले गई।

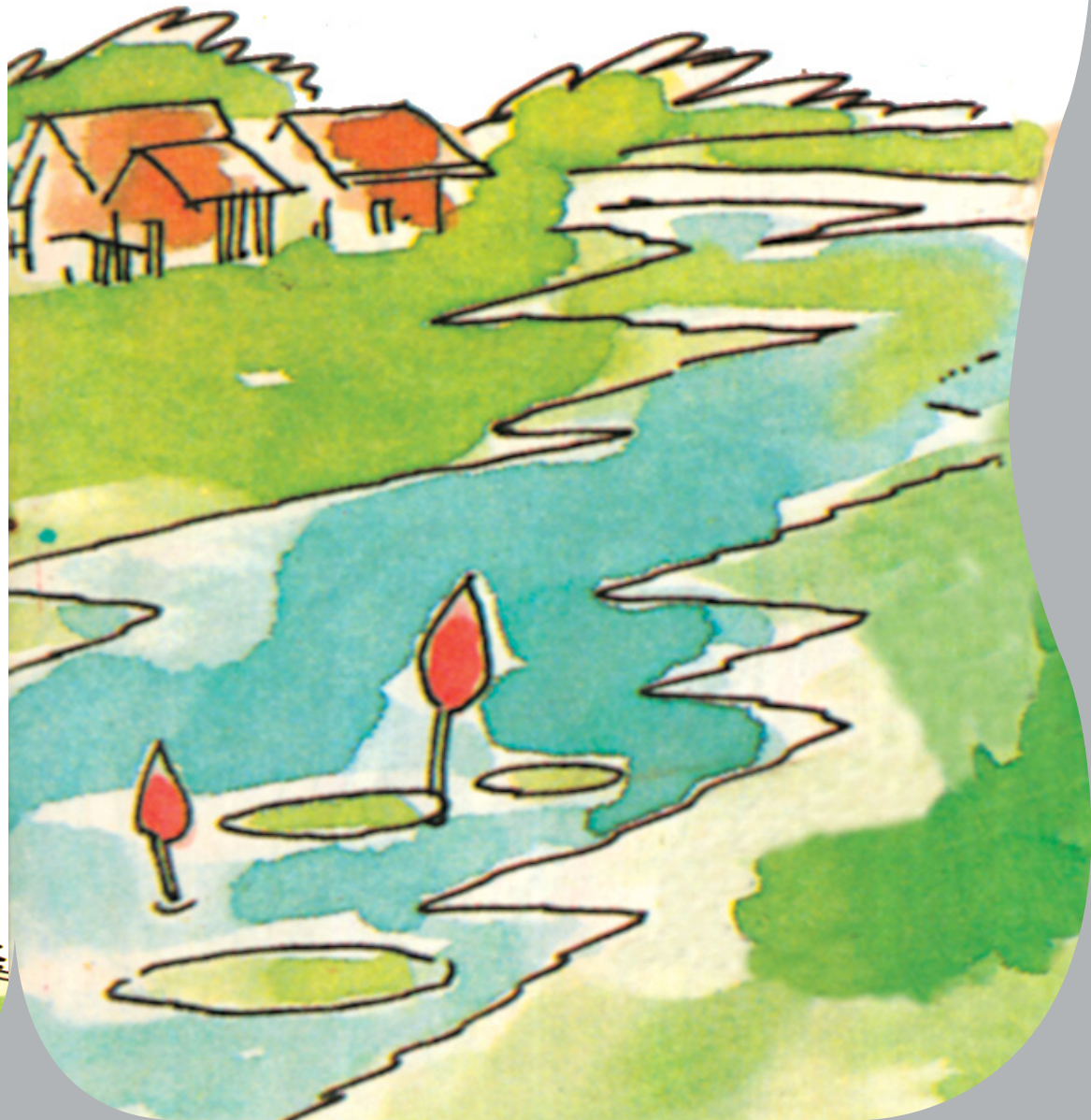

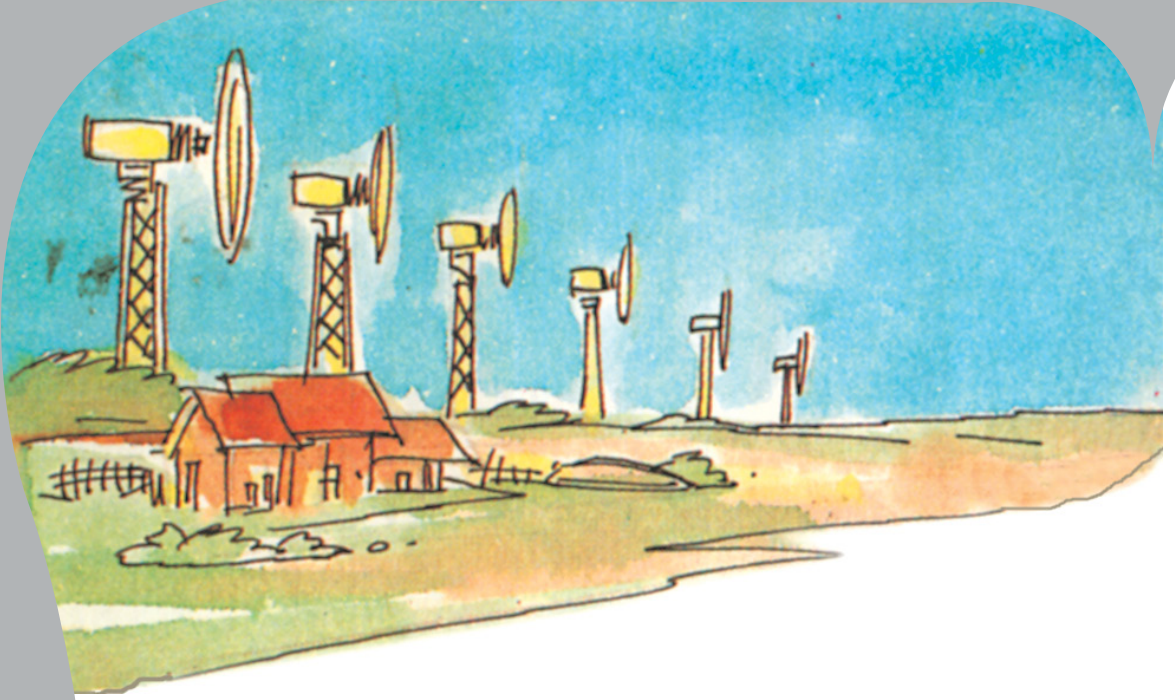

यह दुनिया!

घरों की लम्बी कतारें और
हरे-भरे पेड़। नदी के पास
बहुत बड़े-बड़े पंखे लगे थे।

नूतन ने आश्चर्य से पूछा,
"वे क्या हैं? क्या वहाँ
तुम्हारे सरपंच रहते हैं?"

आशा हँस पड़ी। "वे तो
पवन चक्कियाँ हैं। हवा में
बहुत शक्ति होती है। वह
इन पंखों को घुमाती है,
जिससे एक मशीन चलती
है। यह मशीन खेतों के
लिए पानी निकालती है और
अनाज भी पीसती है।"

सारा कठिन परिश्रम जो
इंसान करते थे, अब वह
पवनशक्ति से होता है!"

नूतन ने सोचा कि आशा के गाँव के लोग बहुत गरीब होंगे, “क्या तुम्हारे यहाँ डीज़ल पम्प नहीं हैं?” उसने पूछा।

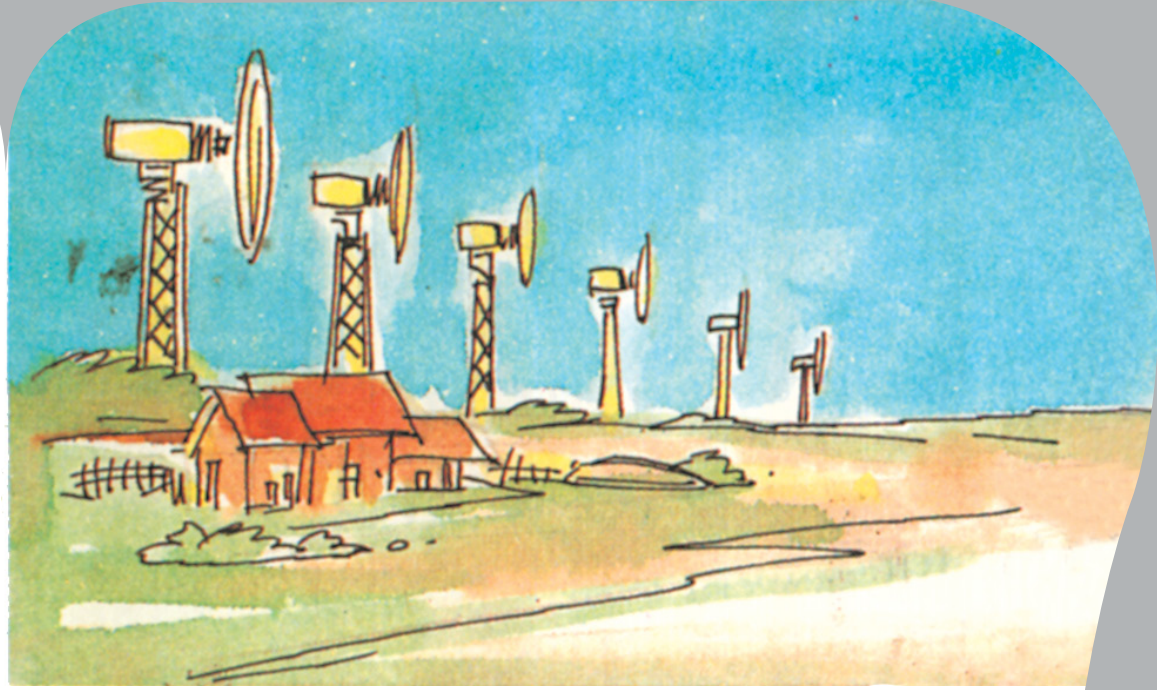

उसे आशा और उसके गाँववालों पर तरस आ रहा था।

“डीज़ल महँगा होता है, और सूरज या वायु की ऊर्जा जैसा साफ़ भी नहीं होता” आशा ने जवाब दिया।

नूतन को समय का पता ही न चला। वह हर नई चीज़ देख और समझ रही थी। जल्द ही वे आशा के घर पहुँच गए।

आशा की माँ, चूल्हे पर कुछ पका रही थीं, पर न तो कहीं धुआँ था, और न ही चूल्हे में लकड़ियाँ जल रही थीं।

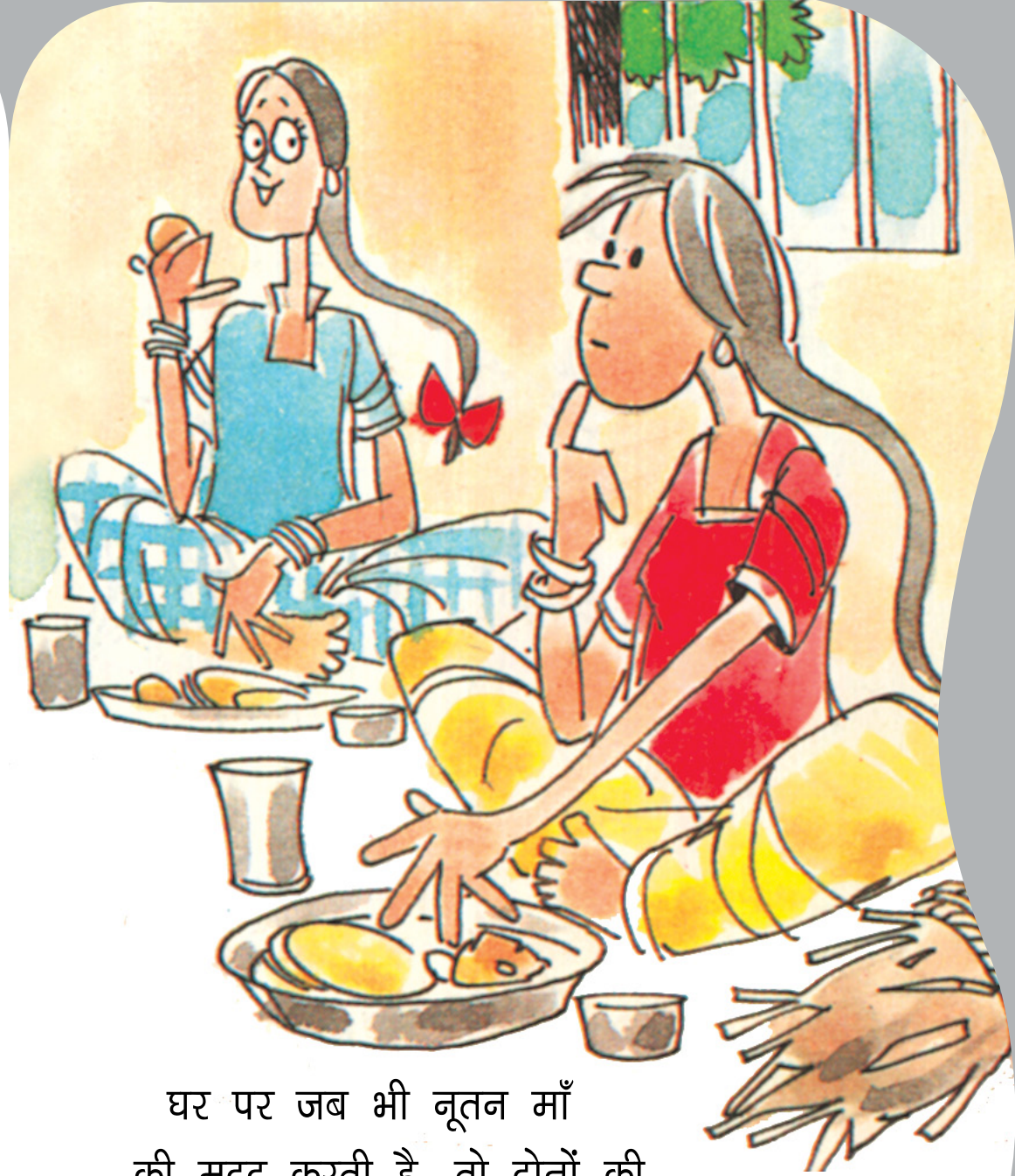

घर पर जब भी नूतन माँ की मदद करती है, तो दोनों की आँखें धुएँ से बहुत जलती हैं।

"अम्मा," आशा बोली, "यह मेरी नई दोस्त नूतन है।" इससे पहले कि आशा की माँ कुछ कहती, नूतन झट से बोल पड़ी, "क्या आप जादूगरनी हैं? आपके चूल्हे से धुआँ क्यों नहीं निकल रहा?"

आशा की माँ मुस्काईं। उन्होंने नूतन को नींबू पानी का गिलास दिया और बोलीं, "यह बायो-गैस का चूल्हा है।

बायो-गैस इंसान
जानवरों और सं
के व्यर्थ पदार्थों
बनता है।"

"छिः" नूतन ने
सिकोड़ते हुए कहा।

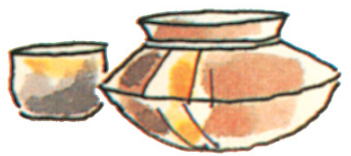

"क्यों, क्या तुम्हे बदबू आ रही है?" आशा ने पूछा।

"नहीं," नूतन को बहुत शर्म आई।

असल में बिलकुल भी बदबू नहीं थी!

"बेकार चीज़ों से भी अच्छी चीज़ें मिल सकती हैं" आशा की माँ ने समझाया "बायो-गैस बनाने के बाद, जो बच जाता है, उससे खाद बनती है।"

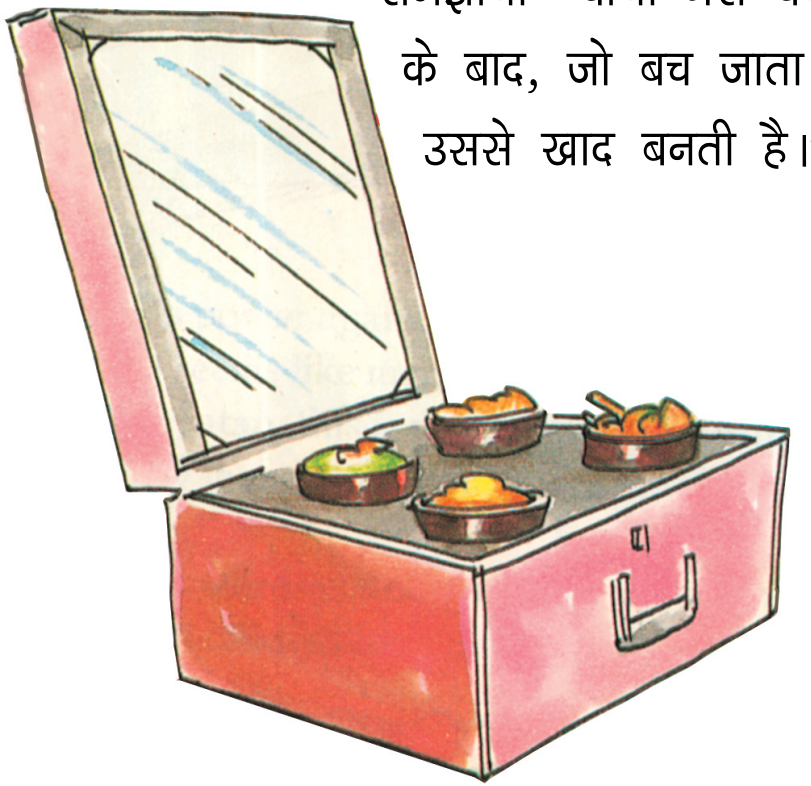

"और तुम्हें मीलों लकड़ी इकट्ठी करने के लिए चलना नहीं पड़ता" नूतन ने धीरे से कहा।

अम्मा ने नूतन का सिर थपथपाते हुए कहा, "रात के खाने के लिए आशा की मनपसन्द दाल बन रही है। जब तक मैं पंचायत की बैठक से वापस आऊँगी, तब तक वह पक चुकी होगी। खाकर जाओगी ना?"

“क्या वह अपने आप पक जाएगी?” नूतन ने आश्चर्य से पूछा।

“हमारे पास एक बक्सा है जिसमें दाल बन रही है,” आशा ने फुसफुसाकर कहा, “देखो!” नूतन ने जब उस काले बक्से को देखा तो उसे बहुत आश्चर्य हुआ।

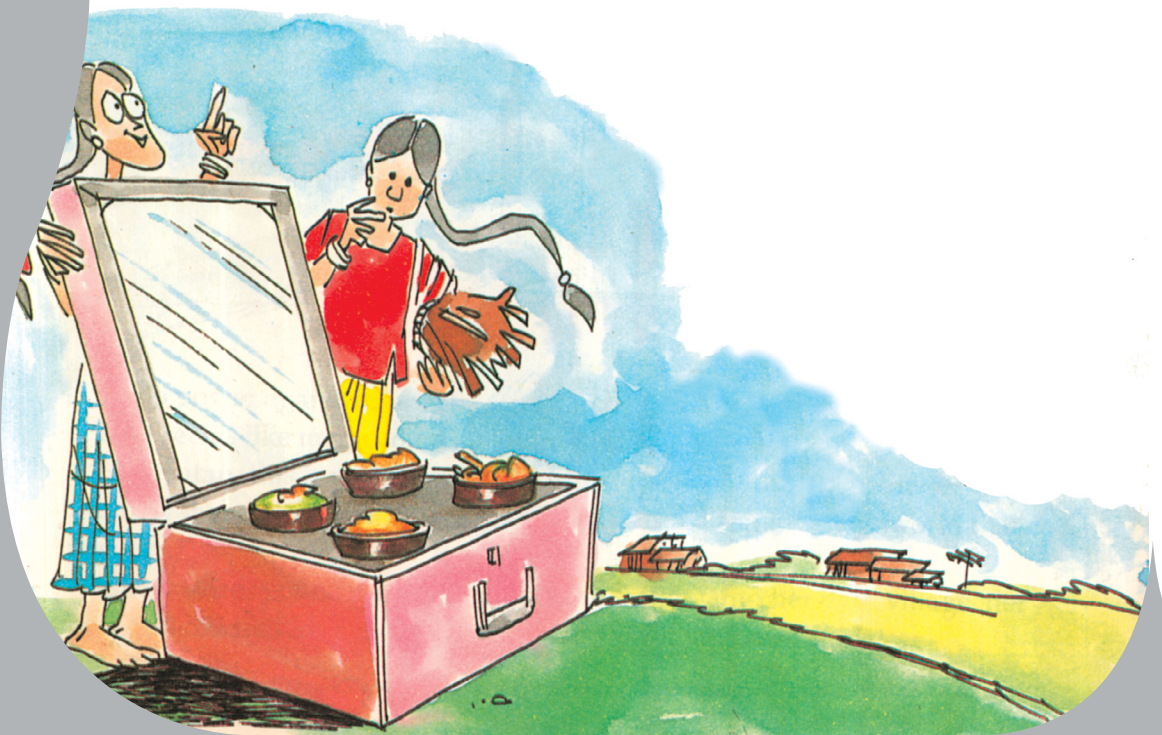

उसमें सब कुछ सूरज का गर्म। स बन रहा था!

नूतन बहुत शर्मिन्दा हुई। आज सुबह, जब उसे बहुत गर्मी लग रही थी, तब उसका मन कर रहा था कि सूरज कहीं चला जाए, और कभी लौटकर न आए।

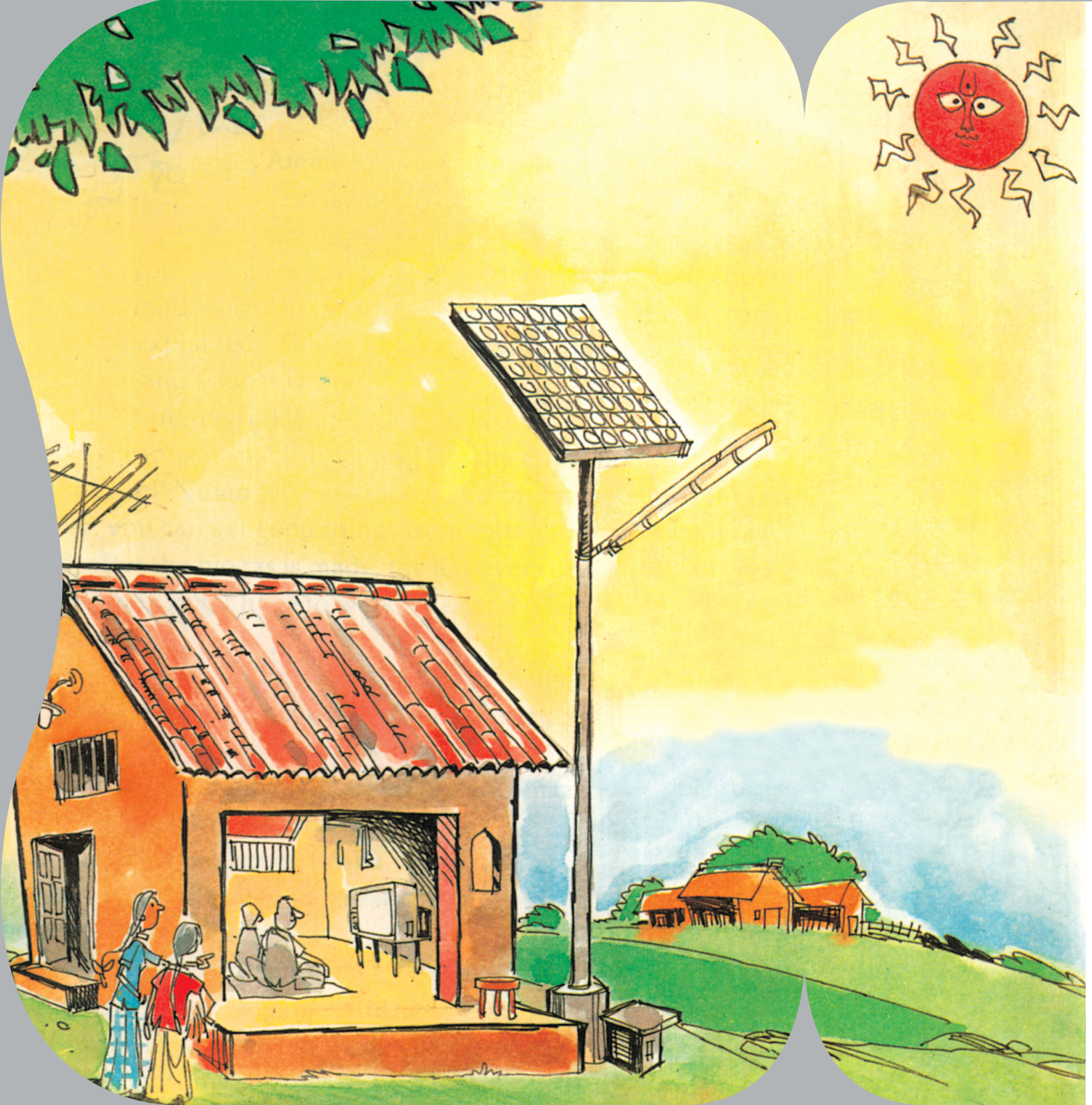

घर जाने का समय हो गया था। बाहर, नूतन की नज़र एक टी.वी. पर पड़ी।

“टी.वी.!” नूतन चौंकी। “तुम्हारा गाँव शहर के पास होगा क्योंकि टी.वी. तो केवल शहर में होते हैं!”

"यह फिर सूर्य की
ऊर्जा का कमाल है!"
आशा हँसती हुई बोली।

"मुझे तो यह सब जादू-सा
लगता है।" नूतन ने लम्बी
साँस भरते हुए कहा।

“नहीं नूतन,” आशा ने कहा। “यह कोई जादू नहीं है। यह हमारा भविष्य है।

यही नई आशा है – एक नई दुनिया की जो तुम्हारी भी हो सकती है।”

नूतन अपने गाँव की ओर चल दी, जो अभी भी अंधेरे में डूबा हुआ था।

उसके दिमाग़ में कई योजनाएँ थीं अपने गाँव में जाकर एक नई दुनिया बसाने की!

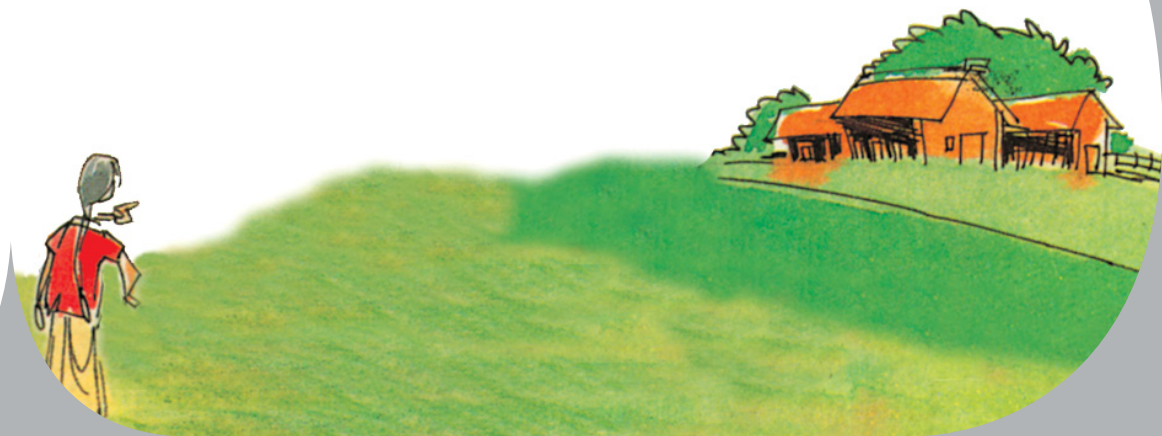

थोड़ी जानकारी, थोड़ा मज़ा!

अब तुम सोच रहे होंगे कि मेरे गाँव में कौन-सी ऐसी जादूई चीज़ है जो सूर्य की ऊर्जा को बाँध सके। तो देखो यह है सोलर पैनल।

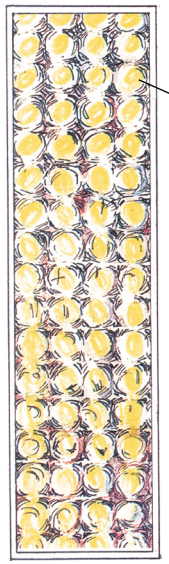

सोलर पैनल

सोलर सैल

ये चमकते हुए गोलाकार सैल हैं। जब सूर्य की किरणें इन पर पड़ती हैं, तो बिजली पैदा होती है।

इस बिजली को लालटेन, सड़क पर लगे बिजली के खंभे और पानी के पम्प आदि को चलाने के लिए प्रयोग में लिया जाता है।

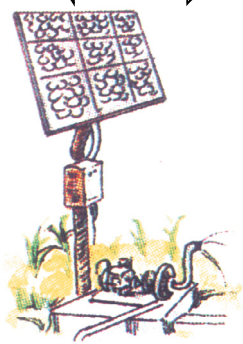

सोलर पानी का पम्प

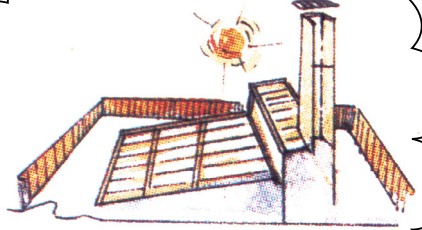

सोलर ड्रायर

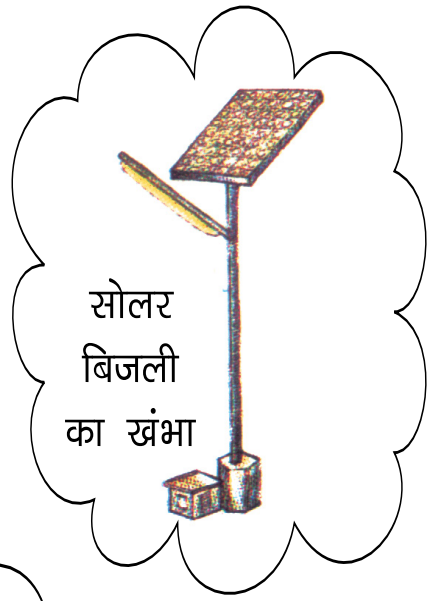

सोलर
बिजली
का खंभा

सोलर लालटेन

जब पृथ्वी सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाती है तब बनता है समय। समय को मापते है सेकंड, मिनट, घंटे, दिन, महीने और साल... तो बूझो समय की चाल।

1 साल	24 घंटे
1 महीना	60 सेकंड
1 दिन	30 दिन
1 घंटा	365 दिन
1 मिनट	60 मिनट

ये शब्द अब हैं दोस्त हमारे

ऊर्जा
धुआँ
जादुगरनी
बायो–गैस
सब्जियों
व्यर्थ

पदार्थों
बदबू
बिल्कुल
सिकोड़ते
थपथपाते
पंचायत

foHkk dky बच्चों की किताबों की विख्यात लेखक एवं संपादक वत्सला कौल का उपनाम है। इन्होंने बच्चों के लिए कहानियाँ लिखने की षुरूआत लोकप्रिय पत्रिका टारगेट से की। इन्हें बच्चों के लिए कल्पना से परिपूर्ण, रंगों में भीगी किताबों की रचना करना अत्यंत भाता है।

t ; बच्चों की किताबों के एक स्वतंत्र चित्रकार हैं। इनका कहना है कि इन्हें भारत की वरिष्ठ लोक–कला और प्रकृति के विभिन्न स्वरूपों से अपने चित्रों के लिए प्रेरणा मिलती है। इन्हें रंगों और अलग–अलग कला षैलियों में अनेक प्रकार के प्रयोग करना अच्छा लगता है।

सीरीज संपादिका: गीता धर्मराजन

कथा नियमित रूप से पेड़ लगाती है उस लकड़ी के बदले, जिससे हमारी किताबों को छापने का कागज़ बनता है।
इस किताब की बिक्री से मिली राशि का 10% अल्पाधिकारी बच्चों के एक स्कूल, कथाशाला को दिया जाएगा।

अगड़म, बगड़म, तिगड़म हम

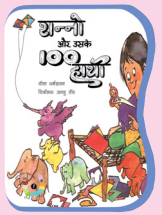

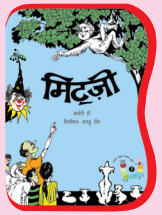

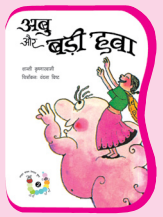

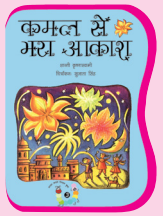

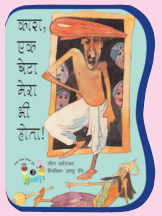

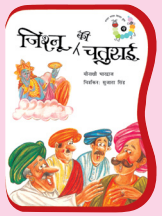

झट-पट सीखें अक्षर हम।
200 दोस्त बनें कम से कम
तिगड़म अगड़म बगड़म हम!

KATHA

यह कहानी "तमाशा" में सन् 1991 में प्रकाशित हो चुकी है
दूसरा संस्करण 2007, तीसरा संस्करण 2009, चौथा संस्करण 2010, पाँचवाँ संस्करण 2010, छठवाँ संस्करण 2013

कृति स्वामित्व © गीता धर्मराजन
स्वत्वाधिकार सुरक्षित। प्रकाशक की आज्ञा के बिना इस किताब के किसी भी भाग को छापना अथवा अन्य किसी पुनः प्रयोग विधि के रूप में प्रतिकृति या इस्तेमाल वर्जित है।

एजियन ऑफ्सेट, नोएडा (उत्तर प्रदेश) द्वारा मुद्रित
ISBN 978-81-89020-95-8
संपादकीय टीम: वैशाली माथुर, युक्ति बैनर्जी

कथा एक पंजीकृत अलाभकारी संस्था है। कथा का मुख्य उद्देश्य है बच्चों और बड़ों में पढ़ने में रुचि एवं इससे मिलने वाली खुशी को बढ़ावा देना। कथा स्कूल दिल्ली के बस्ती, मोहल्लों और अरुणाचल प्रदेश के आदिवासी क्षेत्रों में स्थित है।
ए 3 सर्वोदय एनक्लेव, श्री औरोबिन्दो मार्ग
नई दिल्ली–110017
दूरभाष: 4141 6600, 4182 9998, फैक्स: 2651 4373
ई मेल: ilr@katha.org, इंटरनेट: http://www.katha.org
प्रोडक्शन टीम: प्रकाश आचार्य, यशपाल बिष्ट, विक्रम कुमार

तमाशा बुक्स

4

आशा लेकर आई
थी नूतन के जीवन में
एक नई आशा ...

जैसे बूँद-बूँद से गहरे सागर, रेत के
कणों से फैले हुए रेगिस्तान बनते हैं,
वैसे ही नन्हे बच्चों की सूझ-बूझ से बनती हैं तुम्हें
मनोरंजक कहानियाँ। चलो ले चलते हैं तुम्हें
अभु, नूतन, कोकिला, जिश्नू ... से मिलाने।
क्या है इनमें कोई तुम्हारे जैसा ...?

for young learners
ISBN 978-81-89020-95-8
a katha book
www.katha.org
Rs 50